श्रीदत्ताष्टकम्

(श्री दत्तस्वामि विरचितम्)

हे ! समर्पित और पाण्डित्य पूर्ण भक्तगण

[दिसम्बर 17,2015] श्री स्वामि द्वारा प्रभु एवं आध्यात्मिक गुरु पर एक प्रार्थन{अष्ठकम}लिखा गया है। इस में 8 श्लोक हैं । इन श्लोकों के तीसरे और चौथे पंक्तियों में यह लिखा गया कि क्या उपयोगिता है क्या उपयोगिता है क्या उपयोगिता है (प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है?सार्थकता क्या है ?)इन श्लोकों के पहले और दूसरे पंक्तियों की रचना जिस स्वामी ने किया ,वो स्वयं प्रभु दत्तात्रेय हैं ।)

गुरूणां गुरोर्दत्त देवस्य साक्षात । महा ज्ञान वाराशि रूपस्य रम्य ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्।तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(1॰ जो स्वयं अनंत आध्यात्मिक ज्ञान सागर है,जो गुरुओं के गुरु हैं ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर अगर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

त्रिमूर्तिस्वरूपस्य दत्ताह्वयस्य । त्रिलोकादि मध्यान्तिम स्थान हेतोः।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम् । तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(2 ॰ जो स्वयं ब्रह्म, विष्णु और शिव का स्वरूप हैं, तीनों लोकों के आदि, मध्य और अंत हैं। ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर अगर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

निवृत्ति प्रवृत्ति प्रबोध प्रमाण — प्रकर्षार्थ सन्धान दत्तद्विजस्य ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम् । तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(3॰जो संत निवृत्ति और धर्म प्रवृत्ति को सुंदर ढ़ंग से वेदों और पुराणों के प्रमाण के साथ सह संबंध स्थापित करते हुए ज्ञान का उपदेश दे रहे हैं ,ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर अगर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

समुद्धर्तु मस्मान् समेतस्य भूयो । नराकार माश्रित्य दत्तस्य भूमौ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्।तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(4॰ जो बार-बार नाराकार में इस पृथ्वी पर प्रकट होकर हमारे इस मानव जन्म का उद्धार कर रहे हैं । ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

त्रिदेवात्मनो दत्तनाम्नो महर्**षेः** । श्रुतिस्मार्त विज्ञान सिद्धान्त क**र्तुः**।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्।तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(5॰ जो महान ऋषी है, जो ब्रह्म,विष्णु और महेश्वर के आत्म के रूप में हैं,वहीं वेद आदि के सिद्धांतों का आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वय करके दिखा रहे हैं ,ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

पवित्रानसूयात्रिपुत्रस्य रक्षा - श्रितस्याभितो धेनुधर्म श्चवे**दैः**।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्।तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(6॰ जो पुण्य दंपति अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं ,जो धर्म रूपी धेनु से घेरा हुआ हैं और पवित्र वेद (चारों वेद) रूपी शुनक धर्म धेनु के साथ उनकी रक्षा के लिए प्रार्थना कर रहे हैं ,ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो

सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

महाब्रह्म तेजोभिरत्युज्ज्वलस्य । सुकाषाय चेलस्य दत्तोत्तमस्य ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्।तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(7॰ प्रभु जो काषाय वस्त्र पहने हुए हैं,उन वस्त्रों की कांति में दिव्य अलौकिक कांति भी सम्मिलित है। जो स्वयं सर्व श्रेष्ठ हैं,ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)

सुवेदान्त वर्षान्त दत्ताम्बुदस्य । क्वचित् विद्युदाघात सिद्धान्त भासः।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्नलग्नम्। तत:किम् तत:किम् तत:किम् तत:किम् ?

(8॰जो आध्यात्मिक ज्ञान को वर्षा के रूप में दे रहे हैं ,जैसे आकाश से बारिश के साथ बीच बीच में बिजली चमकती है,वैसे ही ज्ञान वर्षा के साथ बीच बीच में पवित्र सिद्धांतों को भी दे रहे हैं , ऐसे प्रभु दत्तात्रेय के पवित्र और सुंदर पादपद्मों पर हमारा मन निमग्न नहीं हो सकता तो इस जन्म की सार्थकता क्या है ? सार्थकता क्या है ?सार्थकता क्या है? सार्थकता क्या है?)